सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र
(Scope of Social Studies)

क्षेत्र से तात्पर्य किसी विषय की गहराई, विस्तार, वैविध्य एवं अनुभव की सीमा से होता है। अर्थात् उसके विषय के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों को किस विषय-वस्तु एवं अनुभव का ज्ञान प्रदान किया जाये। सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र के विषय में यही सबसे बड़ी कठिनाई है कि इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि उससे विषय के स्वरूप के विषय में ही भ्रांतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सामाजिक अध्ययन का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है। सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं और कार्यकलापों से संबंधित हैं। इस विषय में विभिन्न समाजशास्त्रों से केवल वे ही उप-विषय चुने जाते है जिनका सीधा संबंध मनुष्य की इन आवश्यकताओं से हो और जिनका उद्देश्य क्रियात्मक मूल्य हो। यह विषयों के बीच की कृत्रिम दीवारों को समाप्त करके उनमें एकीकृत संयोजन करता है।

क्षेत्र के विषय में विभिन्न दृष्टिकोण—सामाजिक अध्ययन में विभिन्न समाज-विषयों से अध्ययन-सामग्री ग्रहण की जाती है, अत: संभावना है कि यह विषय बोझिल और अमनोवैज्ञानिक हो जाये, अत: सामाजिक अध्ययन के विद्वानों ने पाठ्य-वस्तु को क्रमबद्ध करने के लिए निम्न विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किये है—

Scanned with CamScanner

I. अवधारणा तथा सामान्यीकरण के आधार पर

यद्यपि सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य 'ज्ञान केवल ज्ञान के लिए' सिद्धान्त को नहीं मानता, फिर भी कुछ मूल तत्व इसकी विषय-वस्तु होंगे ही। अत: इस आधार को मानने वाले सुगम से जटिल के सिद्धान्त के आधार पर मुख्य अवधारणा (concepts) एक स्तर से दूसरे स्तर तक प्रदान करना चाहेगें।

II. सांस्कृतिक अध्ययन का आधार

'संस्कृति' सामाजिक अध्ययन का मुख्य अध्ययन विषय है, अत: इसके क्षेत्र का आधार ही संस्कृति होना चाहिए, ऐसा कुछ व्यक्तियों का विचार है। पहले सरल तथा फिर विकसित संस्कृतियों का अध्ययन किया जाये। इसमें संदेह नहीं कि इस आधार में क्रमबद्धता रहती है, परंतु इस प्रकार का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अर्थहीन रहता है।

III. सामाजिक कृत्य

सामाजिक अध्ययन क्योंकि मानवीय संबंधों का अध्ययन है अत: इसका क्षेत्र मुख्य रूप से मानव की वे क्रियाएँ हैं जो उसकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वातावरण के संपर्क में आती हैं। सभी संस्कृतियों तथा समय में मानव की कुछ समान प्रवृत्तियाँ रही हैं अत: उन्हीं के आधार पर सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र निर्धारित होना चाहिए, यथा—

सेवाओं तथा साधनों का उत्पादन, सेवाओं तथा साधनों का वितरण, सेवाओं तथा साधनों का उपभोग, अन्य व्यक्तियों से संबंध, भौतिक एवं मानवीय स्त्रोतों की सुरक्षा, कलात्मक एवं धार्मिक अभिव्यवित।

शिक्षा, स्वास्थ्य, आमोद-प्रमोद के साधन तथा सरकार की व्यवस्था उपयुक्त क्रियाओं को मानव जीवन के मूलाधार माना गया है, अत: इनके अध्ययन की व्यवस्था सामाजिक अध्ययन जैसे विषय के लिए की जानी चाहिए।

IV. जीवन का क्षेत्र

सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र की जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर भी व्याख्या की जाती है। ये क्षेत्र भौगोलिक अथवा समाजशास्त्रीय हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, समुदाय, राज्य, क्षेत्र, भूमण्डल औद्योगिक क्षेत्र हैं जबकि परिवार, पड़ोस, समुदाय, राष्ट्र तथा मानव-समुदाय समाजशास्त्रीय क्षेत्र हैं। इस आधार को मानने वाले किसी एक इकाई को लेकर उसके विभिन्न पक्षों का अध्ययन करते हैं। वास्तव में, सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य भी भावी नागरिकों का सर्वांगीण विकास है, जिससे वे अपनी भूमिका अधिक प्रभावशाली ढंग से पूरा कर सके।

अत: वांछनीय है कि मानव अपने संसार का ज्ञान प्राप्त करे। संसार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें विभिन्न विज्ञानों का सहारा लेना पड़ेगा। संसार को समझने के लिए मानव ने विभिन्न विज्ञानों का ज्ञान अर्जित किया है। **ड्रे और जोर्डन** (Dray and Jordan) ने इसे ज्ञान-चक्र की संज्ञा दी है।

Scanned with CamScanner

जिसे चार भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) मानव द्वारा संसार की खोज,

(2) प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग,

(3) मानव का अस्तित्व के लिए संघर्ष,

(4) मानव अपना भाग्य-निर्माता।

ये सब विषय सामाजिक अध्ययन की विषय-वस्तु है, परंतु प्रश्न उठता है कि क्या यह संभव है कि समस्त विषयों का ज्ञान प्राप्त किया जाये ? क्योंकि समस्त विषयों का ज्ञान न तो संभव है और न वांछनीय। अत: केवल जीवनोपयोगी अनुभव भी सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में सम्मिलित किया जाये।

जीवन से संबंधित करने के लिए या तो विभिन्न विषयों से अध्ययन-सामग्री लेकर उसे जीवन से संबंधित करें या फिर दैनिक जीवन के अनुभव को ही प्रारंभ बनाया जाये। **ड्रे और जोर्डन** के अनुसार प्रत्येक पाठ को स्थान की दृष्टि से क्षेत्रीय और समय की दृष्टि से समकोणीय रूप में देखा जाना चाहिए (Every topic can be viewed in the perpendicular of time or the horizontal of space)।

इस प्रकार जीवन की घटनाओं से प्रारंभ करके उसे विभिन्न कोणों से देखा जाये। सामाजिक अध्ययन का अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही यह समझें कि उनके साथ कुछ घट रहा है, यह नहीं कि वे कुछ सूचनाओं का अध्ययन कर रहे हैं।

ऐसी अवस्था में सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र व्यक्ति से प्रारंभ होगा और उसमें भी वर्तमान और स्थानीय अधिक महत्वपूर्ण होंगे। धीरे-धीरे सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र भी विकसित होता चला जायेगा; यथा—

व्यक्ति—हमारे जीवन का अधिकांश स्वयं के विषय में ही व्यतीत हो जाता है, हमारा स्वास्थ्य, हमारी आवश्यकताएँ तथा उनकी पूर्ति अत: जिस प्रकार जीवन-विज्ञान में कोशिका (cell) तथा रसायनशास्त्र में तत्व आधारभूत हैं, उसी प्रकार सामाजिक अध्ययन का आधार व्यक्ति है, मानव के लिए स्वयं का अध्ययन अत्यंत रुचिकर एवं उपयोगी है।

विभिन्न विषयों के अंतर्गत यह मानव का अध्ययन नहीं करते। उदाहरणस्वरूप इतिहास में एक निश्चित समय का अध्ययन किया जाता है, अर्थात् उस समय में कौन-कौन से युद्ध हुए, क्या नियम थे आदि, जबकि हमें यह जानना चाहिए कि मानव का जीवन किस प्रकार का था ?

अत: हमें 'मानव' से प्रारंभ करना चाहिए। मनुष्य क्या है ? क्या वह हाड़, मांस, मज्जा एवं रक्त का एक पुतला मात्र है, जिसमें देखने, सुनने और समझने की शक्ति है ? उसका वास्तविक स्वरूप और आवश्यकताएँ क्या-क्या हैं ?

समूह—मानव का अध्ययन करने के उपरान्त यह देखना है कि वह अपने समूह के अन्य 'मानव' से किस प्रकार भिन्न अथवा समान है, तथा समूह में आने से उसके व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है और वह किन-किन मानव-समूह के संपर्क में आता है ?

Scanned with CamScanner

परिवार इनमें प्रमुख एवं प्रथम है तथा मानव का स्वाभाविक समूह है। सामाजिक अध्ययन में परिवार के स्वरूप तथा समस्याओं का अध्ययन किया जायेगा। परिवार के सदस्य, उनके पारस्परिक संबंध, उत्तरदायित्व तथा अधिकार इसके मुख्य अध्ययन-बिंदु होंगे।

परिवार के पश्चात् विद्यालय, पड़ोस अथवा मोहल्ला दूसरा महत्त्वपूर्ण समूह होगा जहाँ बालक अपनी समान आयु वाले दो बालकों के संपर्क में आता है। परिवार में दूसरी समस्याएँ हैं जबकि परिवार में बालक आयु तथा स्तर के अनुसार भिन्न है। इस समुदाय में वह आयु, स्तर तथा बुद्धि में भी लगभग समान है, जिनके समान अधिकार तथा उत्तरदायित्व हैं, अत: उसे एक भिन्न प्रकार की भूमिका का निर्वाह करना है। अतएव इसे नये समुदाय में व्यवस्थित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

फैक्टरी, खेत, कार्यालय, व्यापार ऐसे समूह हैं जो विद्यालय के पश्चात् हमारे सम्पर्क में आते हैं, जहँ अब एक नये प्रकार के अधिकार तथा उत्तरदायित्वों का सामना करना पड़ता है। ये सब मिलकर व्यक्ति के नये वातावरण की सृष्टि करते हैं। यहाँ किस प्रकार के मानवीय संबंध स्थापित किये जायें, यह सामाजिक अध्ययन के अध्ययन की विषय-वस्तु है।

विस्तृत-समूह—स्थानीय वातावरण का अध्ययन ग्राम कॉलोनी अथवा मोहल्ले से आरंभ हो सकता है, जहाँ हम उसकी भौगोलिक विशेषताओं, प्राकृतिक-भौतिक स्त्रोतों, व्यापार तथा उद्योग-धंधे, उसके सामाजिक ढाँचे का अध्ययन करते हैं। तत्पश्चात् हमारे अध्ययन का क्षेत्र अधिक विस्तृत होता चलता है। ग्राम से हम राज्य अथवा क्षेत्र विशेष का अध्ययन करते हें। उसमें भी पूर्वोक्त के समान 'पाठ' का विभिन्न कोणों से अध्ययन किया जायेगा। तदुपरान्त हम राष्ट्र का अध्ययन करेंगे जिसमें देश का भौगोलिक, ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय तथा सांस्कृतिक आदि विभिन्न अध्ययन सम्मिलित होंगे। उदाहरण के लिए यहाँ हम देख सकेंगे कि भारतीय, अरब, रूसी, अमरीकन आदि सामाज की क्या-क्या व्यवस्था है तथा वे किन-किन अंशों में समान अथवा भिन्न हैं।

तदुपरान्त विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय समाज, प्राकृतिक भू-भाग, सामाजिक सभ्यताएँ, राजनीतिक ढांचे, वंशीय समानताएँ, वहाँ के निवासी तथा उनके पारस्परिक संबंधों की व्याख्या की जोयगी, तभी सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति होगी। उदाहणस्वरूप, खाद्य-सामग्री वह साधन है जिससे मानव की क्षुधा-पूर्ति होती है और जिससे वह जीवित रहता है, न कि व्यापार की एक वस्तु है। विज्ञान, कला तथा साहित्य आज अंतर्राष्ट्रीय थाती हैं।

परंतु सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र यहीं समाप्त नहीं हो जाता, समस्त मानव समुदाय उसके क्षेत्र में सम्मिलित हैं, चाहे वह भू-मण्डल के किसी कोने के निवासी हों। परन्तु आज सामाजिक अध्ययन का अध्ययन क्षेत्र भू-मण्डल की सीमाओं को भी लांघ गया है। यदि अमरीका अथवा रूस के परीक्षण सफल हो जाते है, और सौरमण्डल के किसी भी भाग में मानव पहुँच जाता है तो वही हमारे अध्ययन का विषय हो जाता है। सत्य तो यह है

Scanned with CamScanner

कि वहाँ पहुँचे बिना भी वे हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। अत: अवश्य ही हमारे अध्ययन की विषय-वस्तु है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र व्यक्ति से प्रारंभ होकर अधिक से अधिक विस्तृत होता जाता है

संक्षेप में, सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में निम्न तथ्य सम्मिलित किये जायेंगे—

(1) मानव की आवश्यकताओं संबंधी तथ्य—भोजन, आवास, तथा वस्त्र। ये आवश्यकताएं किस प्रकार पूरी की जाती हैं—भौगोलिक तथा ऐतिहासिक प्रभाव, यथा भारत के विभिन्न भू-भागों के निवासी, एस्कीमो, नार्वे, स्वीडन, जापान के लकड़ी के मकान, कश्मीर के शिकारे आदि।

(2) समाज संबंधी तत्व—परिवार, ग्राम, शहर, समुदाय, उनकी समस्याएँ तथा विशेष प्रकार के समाज।

(3) श्रम-विभाजन संबंधी तत्व—आत्मनिर्भर सामाजिक व्यवस्था, समाज का विकास, राष्ट्रों की अंतर्निर्भरता आदि।

(4) व्यापार संबंधी तत्व—अदल-बदल प्रणाली, मुद्रा का आविष्कार, व्यापार-संबंधी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आदि।

(5) अवकाश के सदुपयोग संबंधी तथ्य—धर्म, त्योहार, संगीत, नृत्य, सिनेमा आदि।

(6) विज्ञान संबंधी तत्व—विज्ञान का मानव-जीवन पर प्रभाव; यथा—उद्योग-धंधे, दैनिक जीवन तथा कृषि पर प्रभाव आदि।

(7) शिक्षा संबंधी तत्व—शिक्षा के साधन, प्रेस, रेडियो आदि।

(8) सरकार संबंधी तत्व—स्थानीय, राष्ट्रीय, प्रजातन्त्रीय, एकतंत्रीय आदि।

(9) संयुक्त राष्ट्र संबंधी तत्व—यू.एन. ओ. और उसके अंग तथा राष्ट्रों की एकता आदि।

भारतीय दृष्टिकोण से उद्देश्यों के आधार पर निम्न अध्ययन-सामग्री इसके क्षेत्र में सम्मिलित की जायेगी, ताकि विद्यार्थी विकसित समाज में सक्रिय योगदान दे सकें।

1. विद्यार्थियों को निम्न संबंधी कुछ आधारभूत ज्ञान (Basic understanding) देना :

(अ) भारतीय परम्परा—

(i) भारत में भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक धाराओं का आगमन तथा समाहार।

(ii) भारतीय संस्कृति का विकास अन्य संस्कृतियों के साथ।

(iii) आधुनिक भारतीय संस्कृति, भौतिक आध्यात्मिक प्रभावों का परिणाम।

(iv) आधुनिक विकासि परंपरानुसार ही हो।

(ब) समाज का विकास—

(i) परिवर्तन सामाजिक इतिहास का मूल है।

(ii) परिवर्तन विकसित सामाजिक व्यवस्था के लिए।

(iii) यह परिवर्तन व्यक्तियों के सामूहिक प्रयत्न का फल।

Scanned with CamScanner

(iv) यह परिवर्तन बाह्य शक्तियों के प्रभाव से आंतरिक रहा है।

(v) समाज एक एकीकृत समूह है अत: एक तत्व में परिवर्तन अन्यों में परिवर्तन चाहता है।

(vi) परिवर्तन में भारत ने देना-लेना दोनों ही किया है।

(स) भौतिक वातावरण के तत्व जो समाज के विकास को प्रभावित करते हैं :

(i) सामाजिक विकास, मानव तथा वातावरण की पारस्परिक क्रियाओं पर निर्भर है।

(ii) मानवीय जीवन केवल भौतिक वातावरण से निश्चित नहीं होता। वह अपने वातावरण का विकास कर सकता है।

(द) वर्तमान भारत की समस्याएँ—

(i) क्योंकि प्राकृतिक वातावरण समस्याएँ उत्पन्न करता है, अत: योजना का निर्माण, उद्देश्य आदि उसी आधार पर संभव हैं।

(ii) प्रजातन्त्र व्यक्ति की गरिमा, समानता, सामाजिक उत्थान की आकांक्षा करता है, अत: भारत में उसके लिए प्रयत्न किये जाएँ।

(iii) राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव तथा सह-अस्तित्व।

(इ) भारतीय समाज पर विज्ञान का प्रभाव—

(i) जीवन-स्तर सुधारने में विज्ञान का योगदान।

(ii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।

(iii) यद्यपि वैज्ञानिक प्रगति श्रम-विभाजन लगता है परंतु श्रम का महत्व।

(iv) विज्ञान के कारण अधिक अवकाश अत: अवकाश के क्षणों का सदुपयोग।

(v) वैज्ञानिक प्रगति से युद्ध का भय परंतु शांतिपूर्ण ढंग से रहना।

2. विद्यार्थियों में उपयुक्त अवधारणा के आधार पर निम्न मनोवृतियाँ

(i) राष्ट्रीय स्वाभिमान, भूत का स्वाभिमान, भविष्य की आशा।

(ii) सहिष्णुता-दूसरों के विचारों का आदर।

(iii) जीवन के भौतिक-आध्यात्मिक मूल्यों का आदर।

(iv) विभिन्न जीवन-पद्धतियों (भारतीय-विदेशी) का ज्ञान और सम्मान।

(v) वसुधैव कटुम्बकम् का विचार।

(vi) आधुनिक समस्याओं को सुलझाने में वैज्ञानिक योगदान।

(vii) प्रजातंत्र में आस्था।

(viii) विश्वस्त सूचनाओं तथा बृद्धिमत्तापूर्ण ढंग से समस्या सुलझाना।

(ix) परिवार, समुदाय तथा राष्ट्रीय जीवन के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व।

(x) व्यक्ति द्वारा अपनी समस्या सुलझाना और जीवन-स्तर सुधारना।

(xi) बिना किसी भेदभाव के मानव की गरिमा।

3. कुछ आवश्यक योग्यताओं—दक्षताओं और प्रक्रियओं को ग्रहण करना

(i) समाज-विज्ञान के साधारण साधनों का प्रयोग।

(ii) सूचनाओं का एकीकरण, संगठन तथा व्याख्या।

Scanned with CamScanner